वर्ष:15 | अंक:174 | जून, 2026

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

मूल्य: ₹5

सेवा पाती

47 वां दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह

जहाँ सपनों को मिलता है जीवनसाथी का साथ

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह, 19–20 सितम्बर 2026
सम्मान, स्नेह और नए जीवन की शुरुआत।

NARAYAN LIMBS & CALIPERS
can transform lives
ठीक करें
समृद्ध करें
सशक्त करें
दिव्यांगों के जीवन को
बेहतर कर हर कदम
खुशहाल करें।
HEAL
ENRICH
EMPOWER
NARAYAN SEVA SANSTHAN
UDAIPUR
Donate via UPI
कृत्रिम अंग सहयोग
10,000/-
narayanseva@sbi
अंग भले ही खो दिये
पर जीने की इच्छा कभी नहीं खोई

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

मुख्यालय: 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4,
उदयपुर (राज.) 313002, भारत फोन नं. +91-294-6622222 वाट्सएप: +91-7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

अनुक्रमणिका

इस महिने में .....

मूल्य ▸ 5 वर्ष ▸ 15 अंक ▸ 174
मुद्रण तारीख ▸ 1 जून, 2026 कुल पृष्ठ ▸ 28

04 समय की उपेक्षा नहीं सम्मान करें
06 संस्कृति के सपने होंगे साकार
09 निरंतरता ही सफलता: प्रशान्त भैया
10 तेलंगाना में मॉड्यूलर अंग प्रत्यारोपण
12 आज दौड़ने को तैयार है प्रियांश
13 हार्दिक आमंत्रण
17 सेवा-मनीषी-भामाशाह सम्मान
18 मुम्बई में तकनीक और सेवा का संगम
20 3डी प्रिंटेड सॉकेट
22 टूटे सपने फिर जुड़े
23 नारायण चिल्ड्रन एकेडमी

सम्पादक मंडल

मार्ग दर्शक ▸ कैलाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक ▸ प्रशान्त अग्रवाल । सहयोग ▸ विष्णु शर्मा हितैषी
भगवान प्रसाद गौड़ । डिजाइनर ▸ विरेन्द्र सिंह राठौड़

सेवा-पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 जून, 2026 आर. एन. आई. नं. DELHIN/2017/73538,
स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 09871320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी,
दिल्ली-110006 से प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद से मुद्रित। मुद्रित संख्या 1,00,000 (मूल्य) 5 रूपये

समय की उपेक्षा नहीं सम्मान करें

– सेवक प्रशांत भैया

समय को कीमती मानकर हम प्रायः उसे व्यर्थ न गंवाने की बात करते हैं और दूसरों से भी अपेक्षा करते हैं कि वे भी इसके महत्व को समझें। समय मुट्ठी में भरी रेत के समान है जो पल–पल फिसलकर मुट्ठी को खाली कर देता है। जिसने समय के मूल्य को जान लिया। उसने जिंदगी को भरपूर जी लिया। जो समय को व्यर्थ की बातों–कामों में नष्ट कर देते हैं, समय उन्हें भी नष्ट कर देता है। जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने सदैव समय के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग किया। जो व्यक्ति आलस्य और प्रमाद के प्रभाव में समय का दुरुपयोग करते हैं, प्रायः वे ही समय की कमी का रोना रोते हैं। समयबद्ध जीवन शैली व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होती है। जीवन में समय और ऊर्जा का सीमित भंडार है।

जिस प्रकार बीता समय लौटकर नहीं आता, उसी तरह यदि आप अपनी सारी शक्ति व्यर्थ के कार्यों में झोंक देंगे तो स्वयं के लिए कुछ नहीं बचा पाएंगे। प्रायः कुछ लोग कहते हैं कि समय खराब चल रहा है, जबकि समय कभी बुरा नहीं होता। अच्छी–बुरी होती है, सोच, कार्य के प्रति उदासीनता अथवा प्रयत्न में कमी। अतएव जीवन में अपनी ऊर्जा और अपने समय को बेहद समझदारी से खर्च करें, इन दोनों के बीच संतुलन आवश्यक है। जब कभी यह महसूस हो कि जीवन से ऊर्जा वाला पहलू तेजी से खत्म होता जा रहा है तो स्वयं को समय देना शुरू कर दें। जब हम अंदर से खुश होंगे तो ऊर्जा का स्तर स्वतः बढ़ जाएगा।

इसी प्रकार जीवन में जब उद्देश्य की कमी लगने लगे, कुछ न सूझ रहा हो तो दूसरों की भलाई में समय और ऊर्जा का उपयोग शुरू करें। दुःखी–पीड़ित लोगों की सेवा में जब लग जाएंगे तो समय के सदुपयोग की बेहद खुशी होगा, आप को लगेगा कि किसी के होठों को मुस्कान देने में सक्षम हैं। यही मानवता है और उसकी सार्थकता भी। शास्त्रों में भी कहा गया है कि जो मनुष्य बैठा रहता है, सोया रहता है, उसका भाग्य भी सोया रहता है। सोए अथवा बैठे का अर्थ ही अकर्मण्यता, समय की अवहेलना और आने वाले अवसरों की पदचाप न सुनना है। जो समय पर कदम बढ़ा लेते हैं, वे मंजिल को जल्दी पा लेते हैं। 'चरैवेति – चरैवेति' अर्थात चलते रहो। व्यक्ति का सबसे गहरा संबंध खुद अपने से होता है। अपनी क्षमता को परखें, अध्ययन करें। समय आपकी प्रतीक्षा में ठहरा नहीं रहेगा। खुद आगे बढ़िए। अगर आप समय के साथ नहीं चले तो अच्छे से अच्छा काम भी जो आपके मानस में है, बेकार हो जाएगा। अतः समय की कीमत जानें।

डॉक्टर अमरनाथ देश के प्रसिद्ध चिकित्सक–वैज्ञानिक थे। उनका कहना भी यही था कि समय के साथ चलें और लक्ष्य प्राप्ति में सफल हों। एक बार वे पटना की यात्रा पर थे। वहां के बुद्धिजीवियों ने उनके सम्मान –व्याख्यान के लिए कार्यक्रम आयोजित किया। आयोजक उन्हें निमंत्रित करने उनके प्रवास स्थल पहुंचे। डॉक्टर साहब ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया और आयोजकों से कहा कि वह कार्यक्रम के निर्धारित समय से 30 मिनट पूर्व ही उनके पास किसी को भेज दें। अगले दिन डॉक्टर साहब कार्यक्रम के समय से 30 मिनट पहले ही तैयार होकर आयोजकों के प्रतिनिधि के प्रतीक्षा करने लगे। किंतु वह आया एक घंटे बाद तब तक डॉक्टर साहब अपने अन्य कार्य में व्यस्त हो चुके थे और उन्होंने कार्यक्रम में जाने से इंकार कर दिया। उन्होंने अपने सम्मान की बजाय समय को महत्व दिया, जिसने उन्हें शिखर तक पहुंचाया था।

> **"समय का सदुपयोग ही जीवन का सार है। आज का प्रत्येक क्षण ही कल का निर्माण करता है।"**

हारें न हिम्मत बिसारें न राम

-पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव'

सदा मनुष्य को कभी भी किसी भी कठिन परिस्थिति में न तो घबराना चाहिए और न ही साहस खोना चाहिए। प्रत्येक जीव में एक प्रेरक शक्ति होती है, उसे सदैव बनाए रखना चाहिए। हालांकि कभी ऐसा भी होता है कि जीव अपनी शक्ति और क्षमता को कम आंकते हुए निढाल हो जाता है। यही सबसे बड़ी गलती है। अपने को कभी कमजोर या दूसरों से कम ना आंकें।

यह बात अलग है कि समय–समय पर उस क्षमता अथवा ताकत को जागृत करने में दूसरों की प्रेरणा भी सहायक बनती है।

इसीलिए सज्जनों से सत्संग की आवश्यकता को महत्व दिया गया है ताकि उनके अध्ययन, मनन और अनुभव से आगे बढ़ा जा सके और कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी जीत का परचम फहरा सकें। युगों से प्रचलित एक अद्‌भुत वाक्य ने मानव मात्र को उपकृत किया है – 'हारिये न हिम्मत, बिसारिये न राम'। बड़े से बड़े संकट के समय भी साहस न खोएं। अपनी क्षमता पर विश्वास अडिग रहे।

विराट नगर के राजा सुकीर्ति के पास लौहशांग नामक एक हाथी था।

जिसने राजा को कई युद्धों में विजय दिलाई थी। पर्वताकार यह हाथी जब सेना के आगे हुंकार भरता चलता तो एकबारगी तो दुश्मन की सेना विचलित हो उठती। उसके पांव उखड़ने लगते। प्रकृति के नियमानुसार जन्म के बाद सभी प्राणियों को युवा और वृद्धावस्था से गुजरना पड़ता है, उसी क्रम में लौहशांग भी वृद्ध होने लगा, उसमें पहले जैसा पराक्रम न रहा। उसे हाथीशाला में बांधकर रखा जाने लगा। उसकी ओर पहले जैसा ध्यान भी न दिया जा रहा था। भोजन –पानी भी समय पर नहीं मिल पाता। कई दिनों का भूखा–प्यासा लौहशांग एक दिन किसी तरह बंधन तोड़ पुराने तालाब की ओर चला गया। जहां उसे युवावस्था में नहलाने और पानी में अठखेलियों के लिए ले जाया जाता था। उसने भरपेट पानी पीया और स्नान के लिए गहरे जल में चल पड़ा। तालाब में कीचड़ बहुत था, दुर्भाग्य से वह उसमें फंस गया। जितना निकलने का प्रयत्न करता उतना ही कीचड़ में धंसता जाता। प्रत्यक्षदर्शियों ने समाचार राजा तक पहुंचाया। हाथी को निकालने के लिए के सभी प्रयत्न जब नाकाम हो गए तो एक चतुर मंत्री ने युक्ति सुझाई। वे सभी वाद्य तालाब किनारे मंगवाए गए, जो युद्ध के दौरान बजते थे। सैनिक उनकी ताल पर कदमताल करने लगे। आकंठ कीचड़ में फंसे लौहशांग को अपनी शक्ति का स्मरण हो आया वह चिंगाड़ते हुए कीचड़ को रौंधता तालाब किनारे की ओर इस जोश से बढ़ा कि वह वहां जुटी सेना को क्षण भर में तीतर –बितर कर देगा।

> **"साहस, सत्संग और अच्छे विचार मनुष्य में नया साहस भर देते हैं।"**

बंधुओं ! संसार में साहस यानी आत्मबल ही सर्वोपरि है। वह जाग उठे तो असहाय और विवश प्राणी भी असंभव को भी संभव करके दिखा दे। बस मन को मजबूत करने की जरूरत है। ▫▫▫

संस्कृति के सपने होंगे साकार

मध्य प्रदेश के पन्ना जिले की 8 वर्षीय संस्कृति जन्मजात क्लब फुट (सीटीईवी) विकृति से जूझ रही थी। मुड़े हुए पैरों के कारण उसके लिए चलना–फिरना भी मुश्किल था, जबकि वह भी अपने हमउम्र बच्चों की तरह दौड़ना, खेलना और स्कूल जाना चाहती थी। बेटी की तकलीफ देखकर माता–पिता चिंतित रहते थे। कई प्रयासों के बाद उन्हें नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क दिव्यांग सुधार शिविर की जानकारी मिली और वे संस्कृति को लेकर उदयपुर पहुंचे। जांच में विशेषज्ञ चिकित्सकों ने उपचार शुरू किया, जिसमें प्रारंभिक प्लास्टर के बाद आगे की चिकित्सा प्रक्रिया की योजना बनाई गई है।

अब संस्कृति और उसके परिवार की आंखों में नई उम्मीद है। उन्हें विश्वास है कि उपचार के बाद उनकी बेटी भी अपने नन्हे कदमों से आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेगी और उसके सपने सच होंगे। यह कहानी केवल एक बच्ची के इलाज की नहीं, बल्कि उम्मीद, विश्वास और उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ते कदमों की कहानी है।

कैलिपर्स के सहारे पूजा के कदमों ने पकड़ी राह

पश्चिम बंगाल के अलीपुरद्वार जिले की 25 वर्षीय पूजा कामी का जीवन लंबे समय तक संघर्ष और शारीरिक चुनौतियों से भरा रहा। आठवीं तक शिक्षित पूजा अपने परिवार के साथ रहती हैं और घर पर सिलाई का कार्य कर आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती रही हैं। जब पूजा 7–8 वर्ष की थीं, तब उनकी पीठ में गांठ होने के कारण ऑपरेशन करवाया गया। ऑपरेशन के बाद स्थिति सामान्य रही, लेकिन कुछ समय बाद उनके दोनों पैरों के पंजे पीछे की ओर मुड़ने लगे। धीरे–धीरे समस्या इतनी बढ़ गई कि उनका चलना–फिरना मुश्किल हो गया और वे दैनिक कार्यों के लिए दूसरों पर निर्भर हो गईं। परिवार ने कई स्थानों पर उपचार कराया, लेकिन कोई स्थायी समाधान नहीं मिला।

वर्ष 2022 में पूजा के भाई आदित्य कामी को उदयपुर प्रवास के दौरान नारायण सेवा संस्थान की निःशुल्क उपचार सेवाओं की जानकारी मिली। इसके बाद 12 अगस्त 2025 को पूजा पहली बार संस्थान पहुंचीं।

विशेषज्ञ चिकित्सकों ने उनकी जांच कर उपचार शुरू किया। पिछले एक वर्ष में उनके चार ऑपरेशन किए गए तथा वेजिंग प्रक्रिया के माध्यम से पैरों की विकृति को सुधारा गया। जून 2026 में पूजा के पैरों का प्लास्टर हटाकर उन्हें विशेष कैलिपर्स पहनाए गए। आज वे उन्हीं कैलिपर्स की सहायता से खड़ी होने और चलने लगी हैं। अपनी बेटी को वर्षों बाद पैरों पर खड़ा देखकर परिवार की आंखें खुशी से भर आईं। पूजा की यह यात्रा विश्वास, धैर्य और सही उपचार की शक्ति का प्रेरणादायक उदाहरण है, जो बताती है कि दृढ़ संकल्प के साथ हर कठिनाई को हराया जा सकता है। ***

हादसे ने सब कुछ छीन लिया
नारायण सेवा ने पूर्ति कर दी

छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के लक्ष्मीनगर में रहने वाले 30 वर्षीय जगमोहन यादव की जिंदगी कभी सामान्य थी। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने 12वीं तक पढ़ाई की और अपने माता-पिता के साथ खेती में मजदूरी कर परिवार का सहारा बन रहे थे। घर में माता गोमती देवी, पिता उदयराम और एक बहन का छोटा सा परिवार, लेकिन जिम्मेदारियां बड़ी थीं।

एक दिन अकस्मात सड़क हादसे ने सब कुछ बदल दिया। चार पहिया वाहन से हुए एक्सीडेंट में जगमोहन को अपना दायां पैर गंवाना पड़ा। एक पल में उनकी दुनिया जैसे रुक गई। जो इंसान अपने पैरों पर खड़ा था, अब वह दूसरों पर निर्भर था। धीरे-धीरे यह निर्भरता उनके मन को तोड़ने लगी। "अब मैं क्या कर पाऊंगा....?" यह सवाल हर दिन उन्हें अंदर से कमजोर करता गया। जीवन में जैसे अंधेरा छा गया था।

इसी बीच एक मित्र ने उन्हें नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया। जनवरी 2026 में जब जगमोहन संस्थान पहुंचे, तो उन्हें शायद अंदाजा भी नहीं था कि उनकी जिंदगी फिर से बदलने वाली है।

संस्थान में विशेषज्ञों ने उनके लिए विशेष कृत्रिम पैर तैयार किया और जनवरी के पहले ही सप्ताह में उन्हें पहनाया गया। पहली बार जब जगमोहन उस कृत्रिम पैर के सहारे खड़े हुए, तो उनके चेहरे पर जो सुकून था, वह शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। कुछ डगमगाते कदमों से शुरू हुई यह कोशिश अब आत्मविश्वास भरे कदमों में बदल चुकी है। आज जगमोहन अपने कई काम खुद करने लगे हैं। वह पहले की तरह दूसरों पर निर्भर नहीं हैं। यही नहीं, वह अब अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए संस्थान में निःशुल्क त्रैमासिक कंप्यूटर कोर्स भी कर रहे हैं। जगमोहन कहते हैं-"पहले हर काम के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था, लेकिन अब मैं खुद अपने काम कर पा रहा हूं। संस्थान ने मुझे सिर्फ चलना ही नहीं सिखाया, बल्कि फिर से जीना सिखाया है।

जगमोहन की यह कहानी सिर्फ एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि उन सभी लोगों के लिए उम्मीद की किरण है, जो किसी हादसे के बाद हार मान लेते हैं। क्योंकि कभी-कभी जिंदगी हमें गिराती जरूर है, लेकिन उठने का मौका भी देती है, बस जरूरत होती है एक सही फैसले की। ■■■

संस्थान के सेवा महातीर्थ परिसर में 13 से 16 मई तक संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने विभिन्न राज्यों से नि:शुल्क चिकित्सा, शिक्षा, प्रशिक्षण एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) प्राप्ति के लिए आए दिव्यांग जन और उनके परिजन से 'अपनों से अपनी बात' के अन्तर्गत आत्मीय संवाद कर उनके जीवन, संघर्ष, पारिवारिक स्थिति और संस्थान में प्रवास के दौरान के अनुभवों को साझा किया। प्रस्तुत है - आयोजन का सार-संक्षेपण।

निरंतरता ही सफलता : प्रशांत भैया

जिंदगी कितनी भी मुश्किल क्यों न हो, मुस्कान हर राह को आसान बना देती है। हमारे दिव्यांग भाई-बहन जिस जीवटता, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच के साथ जीवन जी रहे हैं, वह पूरे समाज के लिए प्रेरणा है। उनकी मुस्कान हमें भी हर परिस्थिति में आगे बढ़ने का संदेश देती है।

सेवा केवल सहायता देना नहीं, बल्कि किसी के जीवन में उम्मीद जगाना भी है। संस्थान हर जरूरतमंद दिव्यांगजन के साथ खड़ा है और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। हर संभव सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करता रहेगा। जीवन की राह चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हो, निरंतर प्रयास करने वाला व्यक्ति अंततः अपनी मंजिल तक पहुंच ही जाता है। निरंतरता ही सफलता की वास्तविक कुंजी है। संघर्ष जीवन का स्वाभाविक अध्याय है, लेकिन जो व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी मुस्कुराते हुए आगे बढ़ना सीख लेता है, वही समाज के लिए प्रेरणा बनता है। दिव्यांग भाई-बहनों की जीवटता और आत्मबल बताता है कि हौसलों के आगे सभी सीमाएं छोटी पड़ जाती हैं। यह संस्थान केवल सेवा का केंद्र नहीं, बल्कि उन सपनों का आंगन है जहां निराश आंखों में फिर से उम्मीद के सपने खिलते हैं।

यहां आने वालों को उपचार के साथ आत्मविश्वास, कृत्रिम अंगों के साथ आत्मसम्मान और सहयोग के साथ अपनत्व भी मिलता है। कार्यक्रम में दिव्यांगजनों ने जीवन के सुख-दुःख और अनुभव साझा करते हुए कहा कि संस्थान से मिले नारायण लिम्ब, उपचार और पुनर्वास सेवाओं ने उनके जीवन को नई दिशा दी। किसी ने इसे "नई जिंदगी" कहा तो किसी ने "टूटे सपनों का फिर से जुड़ना" और जीवन को नई उड़ान मिलने की अनुभूति बताया।

तेलंगाना में मॉड्यूलर अंग प्रत्यारोपण शिविर

संस्थान द्वारा हैदराबाद (तेलंगाना) के एग्जिबिशन ग्राउंड में विशाल नारायण मॉड्यूलर कृत्रिम अंग और कैलिपर प्रत्यारोपण शिविर एवं भामाशाह सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में सौजन्य सीएसआर पार्टनर मेक अ चेंज फाउंडेशन (यूके), गोल्डन जुबली और श्री स्वामीनारायण मंदिर विल्सडेन (यूके) का रहा।

जो कदम वर्षों से थमे हुए थे, वे फिर से चलने लगे और जिन चेहरों पर निराशा छाई रहती थी, उन पर आत्मविश्वास और खुशी झलक रही थी, कुछ लाभार्थियों ने कृत्रिम पैरों से फुटबॉल खेला, तो कुछ ने अपने कृत्रिम हाथों से पहली बार गिलास उठाकर पानी पीया।

745 दिव्यांगजन पंजीयन	**815** नारायण कृत्रिम अंग मिले	हैदराबाद तेलंगाना	दिनांक 3 मई 2026

शिविर का परिदृश्य मानवता का सही चित्रण है। नारायण सेवा संस्थान ने सेवा को असाधारण ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। दिव्यांगों की परेड देखते हुए राज्यपाल खुद को रोक नहीं पाए। उन्होंने दिव्यांगों से मिलकर उनका अभिवादन किया और शुभकामनाएँ देते हुए लोकभवन की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

श्री शिव प्रताप शुक्ला
माननीय राज्यपाल
तेलंगाना

जीवन की नई शुरूआत

विशिष्ट अतिथि, आंध्र प्रदेश के उद्योग और वाणिज्य मंत्री टी. जी. भरत ने कहा–नारायण सेवा संस्थान की यह पहल दिव्यांग व्यक्तियों को सशक्त बनाने और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का एक सार्थक उदाहरण है।

समाजसेवी श्री महेंद्र अग्रवाल, श्री विनय वर्मा, श्रीमती सुनीता अग्रवाल, श्री के.वी.वी मल्लिकाजुर्न राव, श्री अशोक पामरेचा, श्री प्रेम प्रकश सिंघवी, श्रीमती सरला अग्रवाल,श्री सुरेश मालानी व श्री गोविन्द राठी भी विशिष्ठ अतिथि के रूप में मंचासीन थे। समाजसेवी एवं संस्थान संरक्षक श्री सत्य भूषण जैन, शाखा संयोजक श्रीमती अलका चौधरी, ट्रस्टी –निदेशक श्री देवेंद्र चौबीसा, तथा पीआरओ श्री भगवान प्रसाद गौड़ ने अतिथियों का स्वागत किया।

तेलंगाना के MLC बोग्गुर दयानंद ने भी शिविर का अवलोकन कर संस्थान के प्रयासों की सराहना की। संचालन महिम जैन ने किया।

कभी खेल नहीं पाता था, आज दौड़ने को तैयार है प्रियांश

उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले का रहने वाला पाँच वर्षीय प्रियांश आज आत्मविश्वास के साथ अपने दोस्तों के साथ दौड़ता और खेलता है, लेकिन कुछ समय पहले तक उसकी जिंदगी संघर्ष और चुनौतियों से भरी हुई थी। जिस उम्र में बच्चे खेल के मैदान में मस्ती करते हैं, दौड़ते हैं और अपने बचपन का आनंद लेते हैं, उसी उम्र में प्रियांश जन्मजात दिव्यांगता के कारण सामान्य जीवन से वंचित था।

प्रियांश का एक पैर जन्म से ही छोटा था, जिसके कारण चलना–फिरना उसके लिए बेहद कठिन था। हर कदम उसके लिए एक चुनौती बन जाता था। जब उसके हमउम्र बच्चे मैदान में दौड़ते, उछलते–कूदते और खेलते थे, तब वह भी उनके साथ शामिल होने की इच्छा रखता था, लेकिन उसकी शारीरिक स्थिति उसे केवल दूर खड़े होकर यह सब देखने तक सीमित कर देती थी। उसके मन में भी सामान्य बच्चों की तरह खेलने, दौड़ने और खुशहाल बचपन जीने के सपने थे, लेकिन परिस्थितियाँ उसके रास्ते में बाधा बनी हुई थीं। अपने बेटे की परेशानी को देखकर उसके माता–पिता बेहद चिंतित रहते थे। बेहतर इलाज की तलाश में उन्होंने कई अस्पतालों और चिकित्सकों से संपर्क किया, लेकिन कहीं भी संतोषजनक समाधान नहीं मिल सका। इसी दौरान सोशल मीडिया के माध्यम से उन्हें नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली। उम्मीद की एक नई किरण लेकर वे जून माह के प्रथम सप्ताह में संस्थान पहुँचे।

संस्थान की अनुभवी चिकित्सा टीम ने प्रियांश का परीक्षण किया और 9 जून को उसे जापान एवं जर्मन तकनीक से निर्मित अत्याधुनिक 3–डी प्रिंटेड नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब प्रदान किया। यह केवल एक कृत्रिम अंग नहीं था, बल्कि प्रियांश और उसके परिवार के लिए नए जीवन की शुरुआत थी।

कृत्रिम अंग लगने के बाद प्रियांश के जीवन में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिले। अब वह आत्मविश्वास के साथ खड़ा हो सकता है, आसानी से चल–फिर सकता है और नियमित रूप से स्कूल भी जाने लगा है। सबसे बड़ी खुशी यह है कि अब वह अपने दोस्तों के साथ खेलता है, दौड़ता है और बचपन की उन खुशियों को जी रहा है, जिनसे वह पहले वंचित था।

आज प्रियांश के चेहरे पर खिली मुस्कान केवल उसकी व्यक्तिगत खुशी नहीं, बल्कि उसके माता–पिता के वर्षों पुराने सपनों के साकार होने का प्रतीक है। जो बच्चा कभी मैदान के किनारे खड़े होकर दूसरों को खेलते हुए देखा करता था, वह आज स्वयं मैदान में दौड़ने और आगे बढ़ने के लिए तैयार है। उसकी यह यात्रा संघर्ष से आत्मविश्वास तक, असहायता से आत्मनिर्भरता तक और निराशा से नई उम्मीद तक पहुँचने की कहानी है।

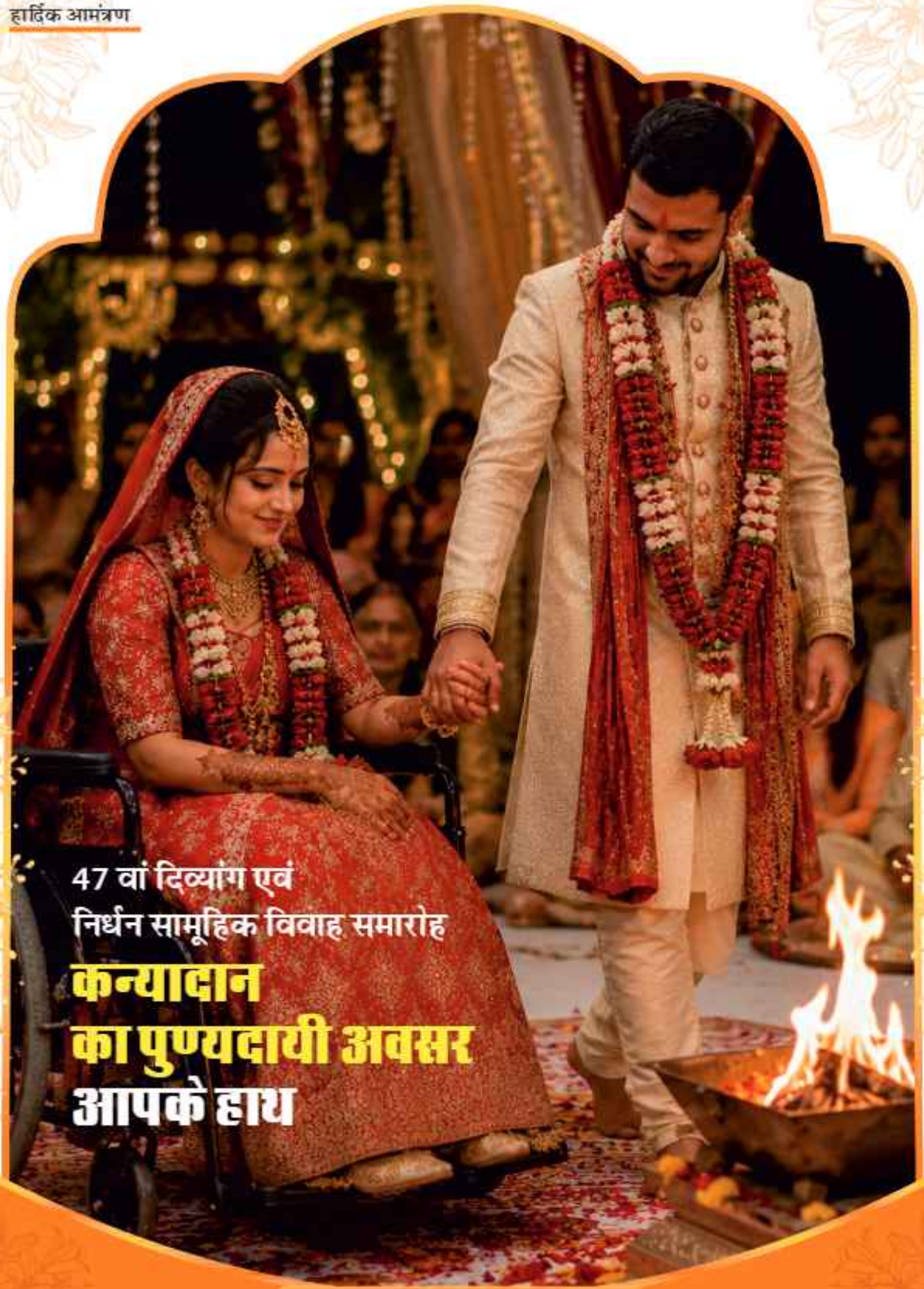

47 वां दिव्यांग एवं
निर्धन सामूहिक विवाह समारोह

कन्यादान का पुण्यदायी अवसर आपके हाथ

दो अनजाने दिल- बनेंगे हमसफर

श्रद्धेय मातृशक्ति एवं पूज्य सज्जनों!

राम-राम.. सादर प्रणाम

सनातन संस्कृति में 16 संस्कारों का अत्यंत पवित्र स्थान है। इन्हीं संस्कारों के माध्यम से मानव जीवन को दिशा, मर्यादा और उद्देश्य प्राप्त होता है। इन संस्कारों में विवाह केवल एक सामाजिक परंपरा नहीं, बल्कि जीवन भर निभाए जाने वाले कर्तव्यों और प्रेम की दिव्य प्रतिज्ञा है।

'विवाह' शब्द स्वयं बताता है -'वि' अर्थात विशेष और 'वाह' अर्थात वहन करना - यानी जीवन की विशेष जिम्मेदारियों को हृदय से स्वीकार करना। विवाह वह शुभ घड़ी है, जहाँ दो आत्माएँ सात फेरों के साथ सात जन्मों तक साथ निभाने का संकल्प लेती हैं। वैदिक परंपरा में यह रिश्ता केवल बंधन नहीं, बल्कि त्याग, समर्पण और विश्वास की पवित्र डोर है।इसी पावन भावना को साकार करते हुए, **आपका अपना नारायण सेवा संस्थान दिनांक 19-20 सितम्बर 2026 को 47 वां 'दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह'** का आयोजन उदयपुर में करने जा रहा है। जिसमें दिव्यांग एवं निर्धन भाई-बहनों का विवाह वैदिक रीति-रिवाजों से सम्पन्न कराया जाएगा।

इस भव्य आयोजन में गणपति पूजन, हल्दी, मेहंदी, संगीत, बिन्दोली और पवित्र अग्नि के समक्ष सात फेरे जैसी सभी संस्कारिक रस्में पूरी श्रद्धा और गरिमा के साथ संपन्न होंगी। यह केवल विवाह नहीं, बल्कि दिव्यांग बेटियों के सूने आँगन में खुशियों की रोशनी भरने का अवसर है तथा गरीब बेटों के जीवन को सम्मान और संबल देने का माध्यम है। यह समारोह मानव सेवा, संस्कार और परमार्थ का त्रिवेणी संगम है।

आपका छोटा सा योगदान इन जोड़ों के अधूरे सपनों को पूर्ण कर सकता है, उनके जीवन में नई शुरुआत की रोशनी ला सकता है। आइए, इस पुण्य कार्य के साक्षी बनें...आपकी उपस्थिति ही हमारा सबसे बड़ा आशीर्वाद होगा।

निवेदक

कैलाश 'मानव' पद्मश्री अलंकृत
संस्थापक चेयरमैन

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष

आपश्री सादर आमंत्रित हैं

मांगलिक कार्यक्रम

दिनांक: शनिवार, 19 सितम्बर 2026

गणपति स्थापना
प्रातः 10.15 बजे से

हल्दी रस्म
प्रातः 11.00 बजे से

मेहंदी रस्म
प्रातः 11.40 बजे से

कन्या दानी सम्मान
प्रातः 11.50 बजे से

महिला संगीत
सांय: 7.00 बजे से

दिनांक: रविवार, 20 सितम्बर 2026

बिन्दोली
प्रातः 10.00 बजे से

तोरण
प्रातः 11:00 बजे से

वरमाला
दोपहर 12:15 बजे से

पाणिग्रहण संस्कार
दोपहर: 12:45 बजे से

विदाई
दोपहर 1:15 बजे से

बनें सेवा के साक्षी

दिव्यांग मोहित को मिली संस्थान में जीने की वजह

मोहित (26) अपने भाई के साथ पैतृक जमीन में धान की खेती में मदद और मजदूरी कर माता–पिता के काम में हाथ बटाते थे। माता पिंकी देवी और पिता बच्चू सिंह भी खेतीहर श्रमिक हैं। परिवार को दाल–रोटी संतोष जनक ढंग से मिल रही थी। परिवार में शांति और सुकून के माहौल पर एकाएक उस समय आसमान टूट पड़ा जब खबर आई कि मोहित दिल्ली के एक अस्पताल में भर्ती हैं और उनका बांया पैर काटना पड़ेगा और दाएं पैर में रॉड डालने के बावजूद वह भी चलने–फिरने में खास मददगार नहीं होगा।

अलीगढ़ (उप्र) जिले के शादीपुर निवासी मोहित 7 जुलाई 2024 को घर से बाइक लेकर दैनंदिन काम के लिए निकले थे कि मार्ग में पीछे आ रहे ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी। इस भयावह हादसे में मोहित बाइक सहित उछलकर दूर जा गिरे। उन्हें अचेत अवस्था में स्थानीय अस्पताल पहुंचाया गया और परिवार को सूचना दी गई। हालत गंभीर होने पर परिवार उन्हें दिल्ली लेकर गया। लेकिन पांव को बचा नहीं पाए। कई दिनों तक अस्पताल में रहने से मोहित का आत्मविश्वास तो टूटा ही, परिवार के सामने गंभीर आर्थिक संकट भी खड़ा हो गया। दसवीं तक शिक्षित मोहित ने उच्च शिक्षा प्राप्त कर शिक्षक–चिकित्सक बनने का जो सपना संजोया था, वह भी बिखर गया। दुर्घटना के बाद जब मोहित आस्था चैनल पर कार्यक्रम देख रहे थे, उसी में उन्हें पता चला कि नारायण सेवा संस्थान उन जैसे लोगों की न केवल निःशुल्क चिकित्सा करता है, बल्कि उनके योग्य रोजगार के द्वार भी खोलता है। अपने पिता के साथ संस्थान आए, जहां उनके बाएं पैर के लिए मॉड्यूलर कृत्रिम पांव और दाएं पैर के लिए कैलीपर तैयार किया गया और कुछ दिनों तक चिकित्सकों की देखरेख में चलने का अभ्यास करवाया गया। मोहित की आंखों में चमक और मन में जीवन के प्रति उत्साह लौट आया। यहीं उन्हें रोजगार से जोड़ने के लिए तीन माह का सिलाई प्रशिक्षण भी दिया गया। आज वे अपने गांव में आत्मनिर्भर जीवन जी रहे हैं। परिवार भी खुश है।

सेवा-मनीषी-भामाशाह सम्मान

संस्थान के सेवा महातीर्थ लियों का गुड़ा में 17 मई को सम्पन्न आत्मीय स्नेह मिलन एवं भामाशाह सम्मान समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से लगभग 200 से अधिक सहयोगियों, शाखा संयोजकों एवं भामाशाहों ने सहभागिता की। शुभारंभ संस्थान संस्थापक पद्मश्री अलंकृत पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव', मुख्य अतिथि श्री रमेश भाई चावड़ा (यूएसए) निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल एवं श्रीमती पलक जी अग्रवाल द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।

मुख्य अतिथि यूएसए से पधारे श्री रमेश जी चावड़ा रहे, जबकि अध्यक्षता श्री भूपेन्द्र चतुरभाई पटेल (गुजरात) ने की। विशिष्ट अतिथियों में श्री हीरालाल सुथार (पाली), श्री जसविंदर अग्रवाल (यमुनानगर), श्री नंदकिशोर गोयल (पाली), श्रीमती कुसुम अग्रवाल (जयपुर), श्री युवराज सिंह गोहिल (राजकोट), श्री दामोदर नागर (कोटा), श्री घनश्याम शरण (विदिशा), श्री अशोकभाई नटवरलाल दवे (राजकोट), श्री हरीश चंद्र पंवार (नीमच), श्री संजय कराड़ा (ग्वालियर), श्री बाबूलाल सीतपुरिया एवं श्रीमती साधना शर्मा (रतलाम) तथा श्री राजकुमार गुप्ता (जयपुर) भी मंचासीन रहे। अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने संस्थान की 40 वर्षों की सेवा यात्रा का उल्लेख किया। इस अवसर पर श्रीमती पलक अग्रवाल ने संस्थान से लाभान्वित दिव्यांग भाई–बहनों का परिचय कराया और उनके प्रेरणादायी अनुभव साझा किए। समारोह में भामाशाहों एवं सहयोगियों को शॉल, उपरना एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। संयोजन महिम जैन ने किया। इसी दिन शाम 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक भव्य भजन संध्या हुई। दूसरे दिन प्रातः सभी अतिथियों ने नाथद्वारा श्रीनाथ जी दर्शन कर प्रस्थान किया। ▪▪▪

मुंबई में तकनीक और सेवा का संगम

जापान एवं जर्मन तकनीक आधारित नारायण मॉड्यूलर लिम्ब आत्मनिर्भरता में सहायक

आधुनिक तकनीक जब सेवा और संवेदना से जुड़ती है, तब वह केवल मशीन या उपकरण नहीं, बल्कि किसी के जीवन को फिर से खड़ा करने का माध्यम बन जाती है। इसी भावना से नारायण सेवा संस्थान एवं श्री राधा कृष्णा चॉरिटेबल फाउंडेशन (यूएसए) के तत्वावधान में 17 मई को मुंबई के निको हॉल, दादर (ईस्ट) में विशाल निःशुल्क दिव्यांग शल्य चिकित्सा जांच, चयन तथा जापान एवं जर्मन तकनीक से निर्मित 3डी प्रिंटेड नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब मेजरमेंट शिविर सम्पन्न हुआ।

जिसमें अत्याधुनिक 3डी स्कैनिंग, डिजिटल मेजरमेंट एवं मॉड्यूलर फिटमेंट तकनीक से दिव्यांगजनों का परीक्षण और मापन किया गया। संस्थान की विशेषज्ञ चिकित्सकीय एवं पीएंडओ प्रोस्थेटिक एंड ऑर्थोटिक टीम ने प्रत्येक दिव्यांग की शारीरिक स्थिति, संतुलन, मसल कंट्रोल एवं मूवमेंट का सूक्ष्म परीक्षण कर उसकी आवश्यकतानुसार कृत्रिम अंग की डिजाइन प्रक्रिया पूर्ण की। संस्थान के प्रोस्थेटिक और ऑर्थोटिक विभाग के प्रभारी डॉ. मानस रंजन साहू के अनुसार कई दिव्यांगजन पहली बार उन्नत तकनीक आधारित कृत्रिम अंग सेवा से जुड़कर उत्साहित दिखाई दिए। संस्थान की मुंबई शाखा के अध्यक्ष श्री महेश अग्रवाल एवं ट्रस्टी श्री देवेन्द्र चौबीसा ने मुख्य अतिथि राधाकृष्ण चॉरिटेबल की श्रीमती जयश्री बेन, दादर विधायक श्री कालिदास कोलंबकर, सियाराम ग्रुप के श्री रमेश आशा जी पोद्दार, रोटरी क्वीन सिटी प्रेसिडेंट डॉ श्याम एवं श्रीमती साधना सिंघानिया, समाज सेवी श्रीमती निम्मी तोरानी, अग्रवाल सम्मेलन के श्री शिवकांत खेतान, ओजस संस्थान के श्री अतुल शाह और रोटरी के पूर्व गवर्नर डॉ राजेंद्र अग्रवाल सहित अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया।

शिविर का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान आधुनिक तकनीक को समाज के

अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाकर सामाजिक नवाचार का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। आर्थिक रूप से कमजोर दिव्यांगजनों को विश्वस्तरीय तकनीक से निर्मित कृत्रिम अंग निःशुल्क उपलब्ध कराना अत्यंत सराहनीय और प्रेरणादायी प्रयास है। अध्यक्षता कर रहे दादर विधायक ने कहा कि संस्थान केवल उपचार नहीं कर रहा बल्कि दिव्यांगजनों को आत्मसम्मान और आत्मनिर्भर बनाने का ईश्वरीय कार्य भी कर रहा है।

शिविर में 170 से अधिक दिव्यांगजनों ने लाभ लिया। जिनमें से 70 दिव्यांगों के लिए 3डी प्रिंटेड नारायण लिम्ब (हाथ-पैर) तथा 29 के लिए कैलिपर्स हेतु डिजिटल मेजरमेंट लिया गया। निःशुल्क शल्य चिकित्सा हेतु 31 का चयन हुआ। जिनकी कास्टिंग और डिजिटल स्कैनिंग हुई, उनके लिए आगामी 1-2 माह में पुनः मुंबई में शिविर आयोजित कर मॉड्यूलर नारायण लिम्ब का फिटमेंट किया जाएगा। ***

3डी प्रिंटेड सॉकेट

नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब का निर्माण जापान एवं जर्मन इंजीनियरिंग तकनीक पर आधारित है। जिसमें उच्च गुणवत्ता वाले हल्के, मजबूत और टिकाऊ कंपोनेंट्स का उपयोग किया जाता है। 3डी प्रिंटेड सॉकेट तकनीक के कारण लिम्ब की फिटिंग अधिक सटीक होती है, जिससे उपयोगकर्ता को चलने–फिरने में सहजता, संतुलन और आराम मिलता है। पारंपरिक कृत्रिम अंगों की तुलना में यह तकनीक अधिक एर्गोनोमिक, कम वजन वाली तथा लंबे समय तक उपयोगी मानी जाती है। डिजिटल मापन प्रणाली से दिव्यांगजन के शरीर की संरचना के अनुसार कस्टमाइज्ड लिम्ब बनता है। इससे घर्षण, दर्द एवं असंतुलन जैसी समस्याएं कम होती हैं और उपयोगकर्ता अधिक सहजता से चल–फिर सकता है।

रोशन हुआ दीपक: नया पैर, नई राह

उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के रहने वाले दीपक चौधरी पेशे से लम्बी दूरी तक ट्रक ड्राइविंग कर परिवार का पोषण कर रहे थे। गृहस्थी सामान्य गति से चल रही थी, कि 2 साल पहले एक दिन अचानक सब कुछ बदल गया। ब्रेक फेल होने से हुए भयंकर सड़क हादसे में दीपक को अपना बायाँ पैर खोना पड़ा।

इस हादसे के बाद उनकी दुनिया ही थम गई। चलना–फिरना मुश्किल, बैसाखी का सहारा मजबूरी बन गया और थोड़ी दूरी चलने पर ही सांसें फूल जाती थीं। हर दिन एक नया संघर्ष, एक नई बेबसी के साथ गुजरता था।

इसी बीच एक दिन उनके एक मित्र ने उन्हें नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के बारे में बताया कि वहाँ दिव्यांगजन को निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाए जाते हैं। दीपक ने संस्थान से तुरंत संपर्क किया और उदयपुर पहुँचे। यहाँ विशेषज्ञ डॉक्टरों ने उनके पैर का माप लिया और सिर्फ तीन दिन में उन्हें उनके अनुकूल नया कृत्रिम पैर प्रदान किया। संस्थान के पुनर्वास केंद्र में दीपक को चलने और संतुलन बनाने की विशेष ट्रेनिंग दी गई। धीरे–धीरे उन्होंने कृत्रिम पैर पर चलना सीखा। पहले की ही तरह उनमें आत्मविश्वास फिर लौट आया।

यही नहीं, दीपक ने संस्थान में रहते हुए ही तीन महीने का मोबाइल रिपेयरिंग कोर्स भी पूरा किया। अब वे आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं – अपनी छोटी–सी दुकान खोलने या किसी कम्पनी में नौकरी की शुरुआत करने का सपना लिए। भावुक होते हुए दीपक कहते हैं –"मैं दिल से धन्यवाद करता हूँ नारायण सेवा संस्थान और उन सभी दानदाताओं का, जिनकी बदौलत हम दिव्यांग दोबारा चल पा रहे हैं और जीवन की नई राह पर कदम बढ़ा रहे हैं।"

टूटे सपने फिर जुड़े

बिहार के मुजफ्फरनगर जिले के विजय कुमार (24) आज फिर से अपने जीवन को आत्मविश्वास और उम्मीद के साथ जी रहे हैं। वर्ष 2019 में हुए एक भयावह ट्रेन हादसे ने उनका सपना छीन लिया था। उन्होंने अपने दोनों पैर खो दिए। घर से खुशी-खुशी काम के लिए निकले थे। लेकिन विधना को कुछ ओर ही मंजूर था। अचानक हादसे का दुख पूरे परिवार पर भी पहाड़ बनकर टूटा... कुछ समय तक वे खुद को असहाय महसूस करते रहे, परंतु हार मान लेना बचपन से ही उनकी फितरत में नहीं था।

परिवार की आर्थिक स्थिति भी ऐसी न थी कि वे कृत्रिम अंग लगवाने की सोचते। उन्होंने बैसाखी सहारे ही सही लेकिन जिन्दगी को सक्रिय रखने की ठानी।

इसी बीच, विजय को नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी मिली। जब वे संस्थान पहुंचे, तो डॉक्टरों और विशेषज्ञों ने उनके लिए नारायण आर्टिफिशियल लिम्ब तैयार किए। यह उनके लिए मानों नई शुरुआत थी। कृत्रिम पैरों की सहायता से उन्होंने न केवल चलना सीखा बल्कि जीवन को आर्थिक पक्ष से जोड़ने का संकल्प भी लिया। संस्थान के कौशल विकास प्रकल्प के तहत कंप्यूटर प्रशिक्षण लेने का निश्चय किया, जिसमें एमएस ऑफिस, इंटरनेट, टाइपिंग और डिजिटल संचार जैसे विषयों की जानकारी थी। विजय ने इस प्रशिक्षण को पूरे समर्पण से पूरा किया और अब वे अपने दम पर डिजिटल कार्यों से परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत बनाने की दिशा में सक्रिय हैं। विजय कहते हैं–संस्थान ने मुझे केवल पैर नहीं दिए, बल्कि जीने का नया उद्देश्य दिया है। अब वे भी आत्मनिर्भर भारत की सोच को साकार करने की राह पर चलकर अपना योगदान सुनिश्चित करेंगे।

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी

आदिवासी और गरीब बच्चों का बुन रहा भविष्य

शिक्षा समाज की नींव है, लेकिन हर बच्चा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पाने के समान अवसर से वंचित रह जाता है। ऐसे बच्चों के लिए नारायण सेवा संस्थान ने करीब दस वर्ष पूर्व एक प्रेरणादायी कदम उठाते हुए नारायण चिल्ड्रन एकेडमी की शुरुआत की। इस संस्थान का उद्देश्य स्पष्ट था कि आदिवासी, मजदूर और गरीब परिवारों के बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित कर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ना।

शुरुआत में केवल प्ले ग्रुप, नर्सरी और पहली कक्षा से शुरुआत की गई। संस्थान ने सीमित संसाधनों के साथ शिक्षा का दीप जलाया और धीरे–धीरे हर वर्ष एक नई कक्षा जोड़ते हुए स्टाफ व सुविधाओं में विस्तार किया। आज यह एकेडमी कक्षा 8 तक संचालित हो रही है और इसमें लगभग 23 प्रशिक्षित शिक्षक बच्चों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। खास बात यह है कि यहाँ शिक्षा पूरी तरह नि:शुल्क है। बच्चों से न तो फीस ली जाती है और न ही किसी प्रकार का अतिरिक्त शुल्क। पाठ्यपुस्तकें, स्कूल ड्रेस, नोटबुक्स सब कुछ संस्थान द्वारा नि:शुल्क प्रदान की जाती हैं। इसके अलावा, बच्चों के घर से स्कूल आने–जाने की सुविधा हेतु संस्थान ने 8 स्कूल बसें भी उपलब्ध कराई हैं, जिससे दूरस्थ क्षेत्रों से आने वाले बच्चों को कोई परेशानी न हो। शिक्षा के साथ–साथ बच्चों का समग्र विकास सुनिश्चित करने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग किया गया है। एकेडमी में 700 से अधिक बच्चों को डिजिटल बोर्ड पर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाती है। साथ ही, खेलकूद, कम्प्यूटर शिक्षा और अन्य गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास पर भी ध्यान दिया जा रहा है। एकेडमी के कई बच्चे जिला और राज्य स्तर पर खेलों में अपना दमखम दिखा चुके हैं।

इस पहल की देखरेख संस्थान की निदेशक वंदना अग्रवाल स्वयं करती हैं। वह बच्चों से एक माँ की तरह जुड़ी रहती हैं और उन्हें पढ़ाई के लिए निरंतर प्रेरित करती हैं। वहीं संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने अपने संकल्प के अनुरूप आदिवासी, गरीब और अनाथ बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सभी आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उनकी सक्रिय भागीदारी से संस्थान का विस्तार और प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। संस्थान का उद्देश्य केवल शिक्षा देना नहीं बल्कि आत्मनिर्भर, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त कर बच्चे समाज में अपने परिवार और समुदाय के लिए बदलाव के वाहक बनेंगे। आने वाले समय में इस एकेडमी को राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त कर 12वीं तक का विद्यालय बनाने की योजना पर कार्य चल रहा है, जिससे बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए भी बेहतर अवसर मिल सकें।

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी की यह पहल न केवल शिक्षा का एक मॉडल है बल्कि यह सामाजिक समानता, करुणा और विकास का एक आदर्श उदाहरण भी है। ऐसे प्रयासों से समाज में आशा, विश्वास और उज्ज्वल भविष्य की किरणें फैलती हैं।

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मूथा,
मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
मो. 09829769960
C/3 नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा–311001

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी
मो. 09887488363
गोस्वामी सदन, पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला, मो. 9932639314, लेविस फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा
मो. 07300227429
के.वी. पब्लिक स्कूल, 35 लादिया, बाग अलवर

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,
मो. 09828242497
9–C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012

अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,
मो. 09166190962
कुमावत कॉलोनी आर्य समाज के पीछे, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,
मो. 09829960811,
ए. 14, गिरधर–धाम, न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री बुंगमल जैन
मो.–09113733141
श्री पारस फ्लूक्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मैन रोड़ सदर थाना गली हजारीबाग

रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992282641
44ए, छोटकी मुरैम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़

धनबाद
श्री गोपाल कुमार खंडिया,
मो. 09608329923,
आजाद नगर फूलनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 09752492233,
मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम

जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी
मो. 09926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी, माढ़ोताल, जिला – जबलपुर

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425030136
ए–3/302, विष्णु हाईटेक सिटी अहमदपुर रेल्वे क्रॉसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड जिला – भोपाल

बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी
मो. 06993609714, बखतगढ़, त.–बदनावर, जि.–धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी,
मो. 09422939767
आकोट मोटर स्टैण्ड, आकोला

परभणी
श्रीमती मंजू दरख
मो. 09422876343

नांदेड़
श्री विनोद सिंघ राठोड़,
मो. 07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम, मु. पो. सारखानी किनवट, जिला – नांदेड़

पाचोरा
श्री सीताराम जी
मो. 09422775373

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी
मो. 02884799, 9029843708,
10–बीबी वाईसराय पार्क, ठाकुर विलेज कान्दीवली मुम्बई

भायंदर
श्री कमलचंद लोढ़ा,
मो. 8080083655 ए/103, देव आंगन जैन मन्दिर रोड़ बावन जिनालय मन्दिर के पास, भायंदर (पश्चिम) ठाणे–401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट–बिझरी त. बड़सर जिला हमीरपुर – 176040

श्री रशील सिंह मनकोटिया मो. 09418061161, जामलीधाम, पोस्ट–रोपा, जिला–हमीरपुर–177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990907
गर्ग मनोरोग एवं दांतों का हस्पताल के अन्दर पदमा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662
3.69–ए, नई अनाज मंडी, कैथल

जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878
108 अनाज मण्डी जुलाना, जींद

पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो. 09991500251
विला नं. 229, ओमेक्स सिटी सैक्टर–14, पलवल

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
अपोसी गली नंबर 19, गोबिंद डेयरी मैन रोड़ करण विहार नियर मेरठ रोड़ करनाल 132001

अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930348
मकान नं.– 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला कैन्ट–133001

नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09729941014 183–हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी
मो. 07799917888
दोषी निवास, जैन मन्दिर के पास, पजीफोन्ड, मडगांव गोवा–403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राठव,
मो. 09274565349
म.नं.ज बी–77, गोल्डन बंग्लो, नाना चिलोडा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह मुंडीर
मो. 9435661074
विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (बिहवाई) जिला–बरेली
श्री विजय नारायण शुक्ला मो. 7060909449,
मकान नं.22/10, सौविगंज, लोवर इन्डस्ट्रियल कॉलोनी बरेली

हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,
मो.–09720990047
दौलकुटी सत्संग भवन, सादाबाद

हापुड़
श्री मनोज कंसल
मो.–09927001112,
बिलाइट टैन्ट हाऊस, कबाड़ी बाजार, हापुड़

गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.–08791269705 बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट, गजरौला, अमरोहा–244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल
मो. 09425536801

श्री देवनाथ साहू
मो. 09229429407
गांव– बेला कछार, पु.पो. बालको नगर, जिला–कोरबा

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,
मो.–09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2 शान्ति नगर, बिलासपुर

बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425529000
रामदेव चौक बालोद जिला–बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो. 09419200399
गुरु आशीर्वाद कुटीर, 32–सी अपर शिव शक्ति नगर, जम्मू–180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा
मो. 09447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा
मो० 9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स एस1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास, शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द

महाराष्ट्र

मुम्बई

मों. 09529920090,07073452174
09529920088
शिवं सृष्टि सीएचएस लिमिटेड, बिल्डिंग नं. 4-बी, फ्लैट नंबर 603, बॉम्बे डाईंग म्हाडा वोड़वाला, नयागांव, दादर (पूर्व) मुंबई (महाराष्ट्र) पिनकोड 400014

पूणे

मों. 09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट गोखले नगर, पूणे-16

दिल्ली

रोहिणी

मों. 08388833718
08388833719, बी-4/67, सेक्टर-9, रोहिणी दिल्ली पिन कोड 110085

जनकपुरी, नई दिल्ली

07023101167, 07412060406
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी नई दिल्ली-110058

विकासपुरी, नई दिल्ली

मों. 09257017592
मकान नं. 342 ब्लॉक-डी महाशी मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

वेस्ट बंगाल

कोलकाता

09529920097, मकान नंबर-580, स्वामी सारणी ग्वाला बागान, कालांदी कोलकाता (पश्चिम बंगाल) पिनकोड 700048

हरियाणा

गुरुग्राम

मों. 08306004602,
हाउस नं.-1936 जीए, गली नं.-10, राजीव नगर ईस्ट, माता रोड, सी आर.पी.एफ. कैम्प चौक, गुरुग्राम - 122001

हिसार

मों. 9257017593, मकान न. 2249, सेक्टर-14, हिसार 125005

रेवाड़ी

मों. 9257017594, C/o श्री ललित कुमार, गली नंबर 7, दूसरी मंजिल, विकास नगर, बुढ़पुर रोड, कुतुबपुर मौला, रेवाड़ी (हरियाणा) 123401

पंजाब

लुधियाना

मों. 07023101153
311/312, बी-17, गुलाटी डांस क्लास के पास, भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़

मों. 07073452176
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर, सेक्टर - 46-सी चंडीगढ़-160047

बिहार

पटना

मों. 09257110805, मकान नं.-23, किताब भवन रोड नॉर्थ एस.के. पुरी पटना-13

उत्तर प्रदेश

मेरठ

मों. 09257110802
38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड, नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम, मेरठ

लखनऊ

मों. 09351230395
फ्लेट नम्बर 202, गुलकृपा अपार्टमेंट न्यू अलीगंज आलमबाग लखनऊ 226005 (उ.प्र.)

राजस्थान

जोधपुर

मों. 08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर (राज) 342001

कोटा

मों. 07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं. 2-बी-5 तलवंडी कोटा (राज.) 324005

अजमेर

नारायण सेवा संस्थान C/O श्रीमती कैलाश उपाध्याय पत्नी स्वर्गीय श्री विश्वप्रकाश उपाध्याय मकान नं. 68, माली मोहल्ला, आनासागर लिंक रोड, शिव मार्ग, कृष्णा गंज, अजमेर (राजस्थान) 305001
मों. नं. 9216022978

गुजरात

सूरत

मों. 09529920082
27, सम्राट टाउनशिप, सम्राट स्कूल के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा

मों. 09529920081
मकान नंबर ए-2/5, सिद्धार्थ पार्क, साईदीप नगर के पास, टाटा एयरकाफ्ट कॉम्प्लेक्स के सामने, न्यू वीआईपी रोड, वडोदा (गुजरात), पिनकोड 390022

अहमदाबाद

मों. 09529920080, 08306008208
07/ए, कपिलकुंज सोसायटी विजय नगर के सामने, मेट्रो स्टेशन, नारायणपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) पिनकोड 380013

(कर्नाटक)

बेंगलुरु

मों. 09341200200, नारायण सेवा संस्थान 40 (12) प्रथम फ्लोर, मॉडल हाउस कॉलोनी, अपोजिट समना पार्क, एनआर कॉलोनी, बसवानगुडी बेंगलुरु-560004

मध्य प्रदेश

ग्वालियर

मों. 9216022978,मकान नंबर 137, कुंडी रोड, गली नंबर 05, कोटेश्वर कॉलोनी, कोटेश्वर मंदिर के सामने, गिर्द, ग्वालियर (म.प्र.) 474003

नारायण नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस

मों. 07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा

मों. 07023101163
मकान नं. 212/63, राधानगर, भारत पेट्रोलियम अधिकारी आवास बिल्डिंग, मथुरा (उ.प्र.)

अलीगढ़

मों. 07023101169
एम.आई.जी. -43 विकास नगर आगरा रोड, अलीगढ़

तेलंगाना

हैदराबाद

मों. 09573938038
लीलावती भवन, 4-7-122/123 इसामिया बाजार, कोठी संतोषी माता मंदिर के पास, हैदराबाद -500027

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद

मों. 07073474435
श्रीमती शीला जैन नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेंटर, बी-330 न्यू पंचवटी कॉलोनी गाजियाबाद - 201009

लोनी

मों. 9257110802
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बम्हाता, चिरोड़ी रोड (भक्तिधाम मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद

आगरा

मों. 07023101174
मकान नंबर ई-52, किडजी स्कूल के पास, कमला नगर, आगरा (उत्तर प्रदेश) पिन कोड न 282005

छत्तीसगढ़

रायपुर

मों. 07869316930, 08306004808
मीरा जी राव, म.नं.-29/500 टीवी टावर रोड, गली नं.-2, फेस-2 श्रीरामनगर, पो.-शंकरनगर रायपुर (छ.ग.)

गुजरात

राजकोट

मों. 09529920083
बी-33, शिव शक्ति कॉलोनी, जेटको टावर के सामने, यूनिवर्सिटी रोड, राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून

मों. 07023101175
साई लोक कॉलोनी, गांव कांवली ग्रांट, शिमला बाय पास रोड, देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी

मों. 08388833711, 07073452135
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी, दिल्ली-6

शाहदरा

मों. 07073474435, बी-85, ज्योति कॉलोनी दुर्गापुरी चौक, शाहदरा

हरियाणा

अम्बाला

मों. 07023101160
सविता शर्मा, 883, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर-7 अम्बाला

कैथल

मों. 08696002432
प्रेम कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल रोड, हनुमान वाटिका के पास कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर

मों. 09928027946, 09257110807
बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर बी-50-51 सनराईज सिटी मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा, जयपुर

मध्य प्रदेश

इन्दौर

मों. 09529920087
43, नन्दलोक कॉलोनी कनाड़िया रोड, इंदौर-452018

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार...

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,000 रू.	50,000 रू.	1,10,000 रू.
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन-नाश्ता सहयोग मित्ति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	2,25,000 रू.

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के सपनों को करें साकार

1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/-
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/-

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe paytm
narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

चैरिटी ईंट

आपश्री का शुभनाम
लिफ्ट के सामने
ससम्मान अंकित किया जायेगा।

₹1,00,000

लिफ्ट सौजन्य

एक तल पर लिफ्ट के प्रवेश द्वार पर
गरिमामय स्वरूप में लिखा जाएगा
आपश्री का शुभनाम।

₹5,00,000

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनेटी 'स्थापना संरक्षक'

सम्मानित स्थान पर आदरपूर्वक
अंकित होगा आपश्री का शुभनाम।

₹11,00,000

सेंट्रल स्ट्रेलाइस कक्ष

चिकित्सा उपकरणों को
कीटाणुरहित बनाने वाली
सेवा कक्ष के सहयोगी बने

₹21,00,000

कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र

समाज की मुख्यधारा में जोड़ने वाले
तकनीकी कम्प्यूटर प्रशिक्षण सेवा कक्ष के
सौजन्यदाता बन पाएं पुण्य।

₹51,00,000

एयर कंडीशनिंग प्लांट स्पॉन्सरशिप

आराम को पावर देना।हीलिंग बनाना।
आपका नाम इस प्लांट पर
गर्व सेदिखाया जाएगा।

₹1,00,00,000

फ्लोर मुख्य सहयोगी

अपने शुभनाम से एक तल का
सहयोग देकर समाज
और परिवार को दे प्रेरणा।

₹1,00,00,000

स्वागत तल सहयोगी

'वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनेटी' हॉस्पिटल, सेवा-करुणा का आधार

कृपया मुख्य प्रांगण के दान-दाता बन चिरस्थायी सेवामना बने।

- आपश्री के प्रियजन की मूर्ति भवन के मुख्य द्वार पर लगाई जाएगी।
- मुख्य लिफ्ट लॉबी प्रवेश द्वार पर आपश्री का शुभ नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित होगा।

₹2,51,00,000

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

दिव्यांग एवं निर्धन कन्याओं के बनें धर्म माता-पिता

कन्यादान (एक दिव्यांग कन्या)
₹ 1,00,000

गृहस्थी उपहार सहयोग (प्रति जोड़ा)
₹ 51,000

पाणिग्रहण संस्कार (प्रति जोड़ा)
₹ 21,000

श्रृंगार सहयोग (प्रति जोड़ा)
₹ 11,000

मेहंदी और हल्दी रस्म (प्रति जोड़ा)
₹ 5,100

Donate via UPI

सेवा-पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 जून, 2026 आर. एन. आई. नं. DELHIN/2017/73538, स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 0987/320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली-110006 से प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद से मुद्रित।
मुद्रित संख्या 1,00,000 (मूल्य) 5 रूपये